# 2

# लोक व जनजातीय कला के रूप

पिछले पाठ में हमने लोक चित्रकला के बारे में जाना। इस पाठ में हम लोक और आदिवासी चित्रकला के विभिन्न रूपों को जानेंगे। भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ के प्रत्येक सांस्कृतिक अंचल की अपनी विशिष्ट लोक और आदिवासी कलाएँ हैं। अपने परंपरागत स्वरूप में लोक तथा आदिवासी चित्रकला क्षेत्र-विशेष के जनसामान्य द्वारा किया गया वह कलाकर्म है जिसके मूल में लोक-कल्याण का विचार होता है और जो अवसर विशेष से जुड़े अनुष्ठान एवं आवश्यकताओं को संपन्न करने हेतु किया जाता है। सामान्यतया यह कलाकर्म आजीविका कमाने हेतु नहीं बल्कि अपने जीवन को प्रचलित विश्वासों और मान्याताओं के अनुरूप सुख एवं शांतिमय बनाने हेतु पारलौकिक शक्तियों से आशीर्वाद प्राप्ति के लिए किया जाता है। ये चित्र अपने आस-पास सहज उपलब्ध प्राकृतिक रंगों से दीवार और भूमि पर बनाए जाते हैं। चित्रांकन हेतु किसी वृक्ष या घास की टहनी या कपड़े का प्रयोग किया जाता है। पीली मिट्टी, गेरू, खड़िया, काजल, चावल का आटा, हल्दी, सिंदूर, महावर, नील, गोबर और वृक्षों के फूल-पत्तों से प्राप्त रंगों के प्रयोग से अंकित किए जाने वाले इन चित्रों को सामान्यतया स्त्रियां ही बनाती हैं। ये चित्र परंपरागत रूप से बदलते अवसरों के साथ लगभग वर्ष भर बनते-बिगड़ते रहते हैं। अत: स्त्रियाँ बचपन से ही इन्हें आत्मसात करती चलती हैं और चित्रांकन की यह धारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्वत: ही हस्तांतरित होती चलती है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारतीय लोक एवं आदिवासी कलाओं की पृष्ठभूमि एवं उनका औचित्य प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विभिन्न लोक एवं आदिवासी चित्र शैलियों को पहचान कर वर्णन कर सकेंगे;
- लोक एवं आदिवासी चित्रों में प्रयुक्त होने वाली चित्रण तकनीक एवं उनके माध्यम का उल्लेख कर सकेंगे;
- लोक एवं आदिवासी चित्रों की प्रमुख शैलियों के महत्व के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- लोक एवं आदिवासी चित्रों में महिलाओं के योगदान पर प्रकाश डाल सकेंगे।

### भारत की प्रमुख लोक एवं आदिवासी कलाएँ

अब आप भारत की विभिन्न लोक एवं आदिवासी कलाओं के बारे में पढ़ेंगे। कुछ प्रमुख लोककलाएँ तथा आदिवासी कलाएँ इस प्रकार हैं :

- महाराष्ट्र की वार्ली चित्रकारी एवं आदिवासियों द्वारा दीवार पर बनाए जाने वाले कोंकण चित्र।
- मध्य प्रदेश के गोंड आदिवासियों द्वारा चित्रित किए जाने वाले गोंड चित्र।
- गुजरात एवं मध्य प्रदेश के राठवा एवं भील आदिवासियों द्वारा दीवारों पर अंकित किए जाने वाले 'पिठौरा भित्ति चित्र'।
- उड़ीसा के सौरा आदिवासियों द्वारा दीवारों पर बनाए जाने वाली 'एड़ीतल'/'इड़ीतल' चित्रकला।
- पश्चिम बंगाल एवं झारखंड के संथाल आदिवासियों में प्रचलित कागज़ पर बने 'चक्षुदान' चित्र।
- उड़ीसा में कपड़े के पट एवं ताड़पत्र पर बनाए जाने वाले 'पटचित्र' एवं दीवार पर बनाए जाने वाले 'झूटी चित्र'।
- हिमालय एवं लद्दाख में कपड़े पर चित्रित किए जाने वाले 'थंका चित्र'।
- बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित दीवार पर बनाए जाने वाले 'मधुबनी लोक चित्र'।
- राजस्थान में दीवार एवं भूमि पर बनाए जाने वाले 'माण्डना' चित्र तथा कपड़े पर बनाए जाने वाले 'फड़ चित्र'।
- मध्य प्रदेश में दीवार पर बनाए जाने वाले 'चित्रावण', 'सांझी', 'माण्डना', 'जिरौति', 'करवाचौथ' चित्र।
- पश्चिम बंगाल के 'कालीघाट' एवं 'पटुआ' पटचित्र।
- आंध्र प्रदेश, तेलंगाना में कपड़े पर बनाए जाने वाले 'कलमकारी' एवं 'चेरियाल पटचित्र'।

उपरोक्त चित्र शैलियों के अतिरिक्त राजस्थान एवं मध्य प्रदेश में भूमि पर बनाए जाने वाले माण्डना, महाराष्ट्र एवं गुजरात के रंगोली, बिहार के अरिपन, बंगाल के अल्पना, तमिलनाडु के कलम तथा केरल में प्रचलित कोलम (भूमिचित्र) प्रमुख हैं।

## 2.1 भारत की प्रमुख क्षेत्रीय लोक एवं आदिवासी कलाएँ

अब आप महाराष्ट्र की चित्रकथी कला को जानेंगे।

### 2.1.1 चित्रकथी चित्र

**शीर्षक : चित्रकथी**
**स्थान : महाराष्ट्र**
**प्रकार : चित्रकला**
**समय : समकालिक**

## संक्षिप्त परिचय

चित्रकथी शब्द, दो शब्दों से मिल कर बना है- चित्र एवं कथी (कथा), जिसका आशय है चित्रों के माध्यम से कथा वाचन। यह महाराष्ट्र में प्रचलित एक प्राचीन एवं आंचलिक चित्रण शैली है। इन चित्रों का प्रयोग पैठण एवं पिंगुली गाँवो के घुमक्कड़ कथावाचक अपने प्रदर्शनों को प्रभावशाली एवं रुचिकर बनाने हेतु करते थे। कालांतर में इस परंपरा की लोकप्रियता कम होती गई और यह मृतप्राय हो गई । पिछले कुछ वर्षों में इसके पुनर्जीवन के प्रयास किए जा रहे हैं।

सत्रहवीं एवं अठाहरवीं सदी में यह चित्रशैली अपने चरम सीमा पर थी। इसका प्रसार महाराष्ट्र के साथ-साथ सीमावर्ती आंध्रप्रदेश एवं कर्नाटक में भी था। ये चित्र इस क्षेत्र के घुमक्कड़ कथा वाचक आदिवासी समुदाय द्वारा बनाए एवं काम में लाए जाते थे। वर्तमान में चित्रकथी शैली के कुछ चित्रकार महाराष्ट्र के सिंधु दुर्ग जिले के कुडाल गाँव में इस चित्रण परंपरा को जीवित रखे हुए हैं।

ये हाथ से बने कागज़ों पर प्राकृतिक रंगों से चित्रित किए जाते हैं। इनमें रामायण एवं महाभारत जैसी कथाओं के स्थानीय जनप्रिय कथानक को बहुत ही मौलिक एवं रुचिकर ढंग से दर्शाया जाता है। अत: एक संपूर्ण कथानक के लिए अनेक कागज़ों पर घटनाक्रम की शृंखला तैयार हो जाती है, कथा गायन के समय इन्हें एक के बाद एक दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। एक कथा की सभी घटनाओं को प्रदर्शित करने वाले सारे चित्र एक साथ बाँधकर रखे जाते हैं, जिन्हें 'पोथी' कहा जाता है। चित्रकार कथा वाचकों के पास ऐसी अनेक चित्र पोथियाँ होती हैं जोकि पारिवारिक सम्पत्ति समझी जाती हैं। इन स्थानीय लोक चित्रों में भूरे-कत्थई पत्थर से प्राप्त रंग का अधिक प्रयोग किया जाता है तथा विशाल नेत्रों वाली शैलीगत आकृतियाँ इन चित्रों को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती हैं। इन चित्रों में सरल एवं स्वत: स्फूर्त तूलिका संघातों से सहज एवं सरल चित्रकारी देखने को मिलती है। इन चित्रों के बनाए जाने के दो प्रमुख केंद्र थे- पिंगुली एवं पैठण।

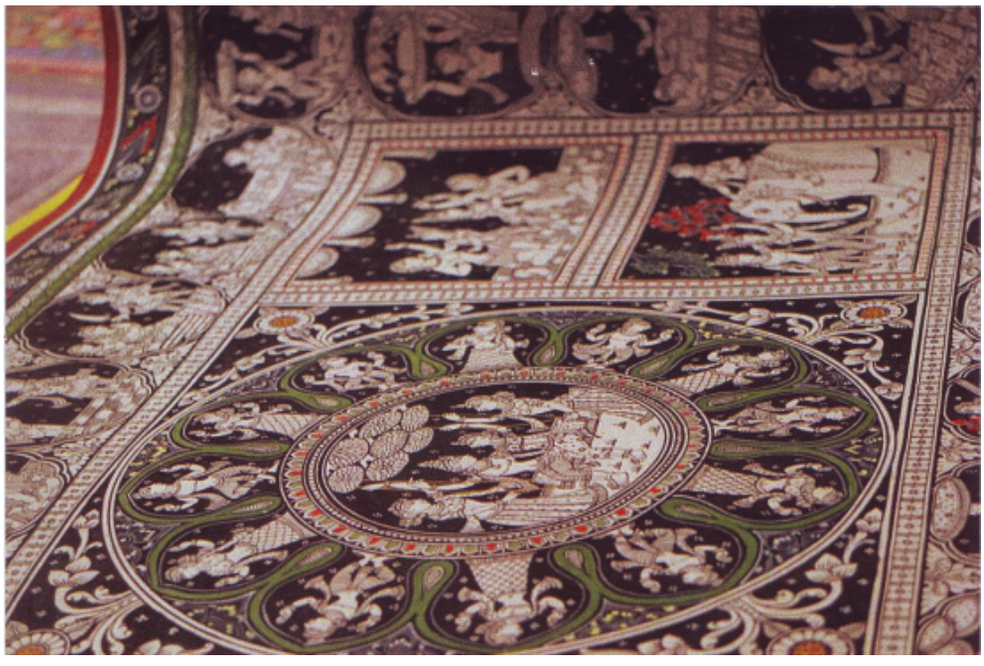

चित्र 2.1: चित्रकथी

## सामान्य विवरण

इन चित्रों के प्रचलन के बारे में एक मत यह भी है कि इनका उद्‌गम स्थल महाराष्ट्र का पैठण नगर है। गोदावरी नदी के पठार क्षेत्र में स्थित यह नगर एक तीर्थ स्थल है। विठ्ठल मंदिर के दर्शनार्थ आने वाले हज़ारों तीर्थयात्री इन चित्रों को अपनी तीर्थ यात्रा की यादगार के रूप में ले जाते थे। प्रस्तुत चित्र में रामायण और महाभारत काल की कहानियों को चित्रित किया गया है। आम तौर पर रामायण, महाभारत के साथ-साथ 'विठ्ठल परचविशी' एवं 'छलछण्डु आरण्यक' पर आधारित चित्र भी बनाए जाते थे जिनका आकार सामान्यत: 30 से.मी. 40 से.मी. रखा जाता था। संपूर्ण विठ्ठल तीर्थयात्रा दर्शाने हेतु बड़े आकार के चित्र भी बनाए जाते थे। इन चित्रों की चित्रण शैली के बारे में माना जाता है कि इनकी शैली तत्कालीन लघुचित्र एवं मंदिरों की दीवारों पर बनाए जाने वाले भित्तिचित्रों की शैली से प्रभावित है। चित्रकार चित्रण हेतु रंग, वनस्पति एवं प्राकृतिक पदार्थों से स्वयं तैयार करते थे।

चित्रकथी चित्रों को कभी-कभी पिंगुली चित्र भी कहा जाता है, क्योंकि महाराष्ट्र के सिंधु दुर्ग क्षेत्र में स्थित यह गाँव आज भी इस चित्र परंपरा को जीवित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कहते हैं कि यहाँ के ठाकर/ठक्कर/ठाकुर घुमक्कड़ आदिवासी जो चित्रकथा प्रदर्शन के साथ-साथ कठपुतली प्रदर्शन भी करते थे तथा इसका प्रयोग शिवाजी गुप्तचरों के लिए भी करते थे। महाराष्ट्र के कोंकण के ग्रामीण क्षेत्र में चित्रकथी एवं कठपुतली का प्रदर्शन उत्सवों एवं त्योंहारों के अवसर पर किया जाता है। यह प्रदर्शन एक मण्डली द्वारा किया जाता है जिसमें ढोलकी, टुनटुना, मंजीरा एवं शंख आदि वाद्य भी प्रयुक्त किए जाते हैं। चित्रकथी चित्रों का एक महत्वपूर्ण एवं बड़ा संग्रह राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली एवं राजा दिनकर केलकर संग्राहलय, पुणे, महाराष्ट्र में देखा जा सकता है।

गाँव वालों के मनोरंजन के लिये प्राचीनकाल में चित्रकथा की लोकप्रियता थी। टी.वी. सिनेमा आदि के प्रचलन के पश्चात चित्रकथी की लोकप्रियता घटने लगी। फिर भी कई चित्रकारों ने इस कला को मनोरंजक माना है। इस चित्र में एक समकालीन कलाकार की कलाकृति का नमूना चित्रित है। इस चित्र की विषयवस्तु महाकाव्य रामायण से संबंधित है। चित्र के मध्य भाग में गोलाकृति संयोजन में राम सीता की प्रतिमा बनाई गई है। इसके चारों तरफ हिन्दू धर्म की विभिन्न देवियों को दर्शाया गया है। इसी चक्राकार संयोजन की व्याख्या करने के लिये आगे और भी कई चित्र बनाएँ गए हैं। असल में चित्रों की यह शृंखला आगे के घटनाक्रम को खोलते हुए कहानी की व्याख्या करती है।

इस चित्र में रंगों का इस्तेमाल बहुत सीमित है एवं रेखांकन को बहुत महत्व दिया गया है। सरल तथा बहुत ही स्पष्ट रेखाओं के द्वारा इन चित्रों को बनाया गया है।

## पाठगत प्रश्न 2.1

**सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

1. चित्रकथी शैली के कलाकार मुख्यत: किस समुदाय से थे-

   (i) ठाकुर (ii) मुगल

   (iii) राजपूत (iv) कायस्थ

2. महाराष्ट्र के उस क्षेत्र का नाम बताइए जहाँ चित्रकला की यह शैली लोकप्रिय है-

(i) कोंकण (ii) बांकुरा

(iii) गाजियाबाद (iv) वीरभूम

## 2.2 ताड़पत्र चित्र

**शीर्षक : ताड़पत्र**

**स्थान : दक्षिण एशिया**

**काल/अवधि : पाँचवीं सदी ईसा पूर्व**

**प्रकार : चित्रकला**

### संक्षिप्त परिचय

प्राचीन काल से ही ताड़पत्र लिखने हेतु प्रयुक्त किए जाते रहे हैं। कागज़ के प्रचलन से पूर्व ताड़पत्र लेखन का एक सशक्त एवं लोकप्रिय माध्यम थे। दक्षिण एशिया एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया में इनका प्रचलन अधिक रहा है। यहाँ इनका प्रयोग पाँचवी सदी ईसा पूर्व से आरंभ हो चुका था। यहाँ इस

चित्र 2.2: ताड़पत्र चित्र

कार्य हेतु ताड़ की 'बोरास्सस' अथवा 'कोरीफा अम्ब्राक्यूली फैश' प्रजाति की सूखी पत्तियों को धुँए द्वारा संसाधित या विशेष प्रकार से तैयार करके काम में लाया जाता था।

ताड़पत्र पर लिखाई हेतु इसकी सूखी पत्तियों को आयातकार में एक माप में काटा जाता था तथा उन सभी के मध्य में एक छिद्र बना दिया जाता था। हस्तलिखित पाण्डुलिपि के सभी ताड़पत्रों को उनके मध्य बने छिद्र में डोरी पिरोकर बांध दिया जाता था। इस प्रकार तैयार पाण्डुलिपि पोथी कहलाती थी। ताड़पत्र पर लिखी गई ताड़पत्र पोथियों पर चित्रण का कार्य दसवीं शताब्दी ईसवीं से आरंभ हुआ एवं पंद्रहवीं शताब्दी ईसवीं तक यह जैन धर्म संबंधी ग्रंथों में बहुतायत से बनाए गए। इस काल की हस्तचित्रित पोथियां 'जैसलमेर भण्डार' (राजस्थान) नामक जैन संग्रह में देखी जा सकती हैं। इन पोथियों में जैन धर्म संबंधी कथानकों का चित्रण किया गया, जिनमें आकृतियों का रेखांकन काले रंग से किया गया है तथा उनमें नीले, लाल रंग एवं स्वर्ण का प्रयोग बहुतायत से हुआ है।

## सामान्य विवरण

ताड़पत्र पर लेखन एवं उन पर चित्रण की यह प्राचीन परंपरा एक अलग रूप में भारत के ओडिशा राज्य में आज भी जीवित है। भुवनेश्वर के स्टेट म्यूजियम में चालीस हज़ार से भी अधिक ताड़पत्र पोथियाँ संग्रहित हैं, जिन्हें उड़िया एवं संस्कृत में लिखा गया है। इनमें देवदासियाँ, कामसूत्र की विभिन्न मुद्राएँ आदि चित्रित हैं। वास्तव में ताड़पत्र पर लेखन अथवा रेखांकन का कार्य लोहे से बने एक विशेष औजार, जिसे स्थानीय भाषा में 'लेखना' कहा जाता है, द्वारा किया जाता है। 'लेखना' एक लंबी मोटी कील के समान होता है, जिसका एक सिरा नुकीला होता है। इसके द्वारा ताड़पत्र पर आकृतियाँ एवं अक्षर उत्कीर्ण किए जाते हैं। ताड़पत्र पर रेखांकन करने हेतु एक सधे एवं दक्ष तथा चित्रांकन में पारंगत हाथ की आवश्यकता होती है। ताड़पत्र पर उत्कीर्ण आकृति को मिटाया या सुधारा नहीं जा सकता। आकृति उत्कीर्ण करने के बाद उस पर काली स्याही लगाई जाती है, जो उत्कीर्ण रेखाओं के मध्य घुसकर उन्हें काला कर देती है। अतिरिक्त स्याही को गीले कपड़े से पौंछकर साफ कर दिया जाता है, क्योंकि ताड़पत्र की सतह चिकनी होती है अत: उस पर स्याही नहीं चिपकती। अत: उसे पौंछ कर साफ़ किया जा सकता है। ताड़पत्र पर किया गया रेखांकन अथवा अक्षरांकन पत्र की सतह को खुरचकर अथवा खोद कर किया जाता है, इसलिए वह स्याही को सोख लेता है। इस तकनीक का पारंपारिक उपयोग ओडिशा के नायकर समुदाय के लोग जो यहाँ ज्योतिष का काम करते हैं, नवजात शिशुओं की जन्मकुंडली अथवा जन्मपत्री बनाने हेतु करते रहे हैं। इन हस्तलिखित जन्मपत्रियों में बनाए गए अनेक प्रकार के रेखांकन, दृष्टांतचित्रों की भूमिका निभाते हैं। क्योंकि ताड़पत्रों की चौड़ाई बहुत कम होती है और चित्रांकन हेतु यह स्थान पर्याप्त नहीं होता इसलिए बड़ी आकृति बनाने हेतु अनेक पत्रों का प्रयोग करना पड़ता है। इस प्रकार एक जन्मकुंडली बनाने में अनेक पत्रों का प्रयोग करना होता है, जिन्हें बाद में सिलाई करके आपस में जोड़ दिया जाता है। सिलाई इस प्रकार की जाती है कि पत्तों को एक पोथी के रूप में बाँधा जा सके।

कालांतर में ताड़पत्रों पर जगन्नाथ उपासना से संबंधित; कृष्णलीला, दशावतार, कालियादमन, कांची अभियान एवं महाभारत, रामायण आदि विषयों पर रेखांकन एवं बहुरंगी चित्रांकन किया जाने लगा।

कृष्ण राधा के रासलीला का चित्रांकन विशेष रूप से ओडिशा के पुरी एवं भुवनेश्वर नगरों में बहुप्रचलित विषय हैं, जो पटचित्र बनाने के प्राचीन केंद्र हैं। ये चित्र यहाँ के महाराणा एवं महापात्र समुदाय के पारंपरिक चित्रकार बनाते हैं। सूती कपड़े से तैयार किए गए पट पर बनाए जाने वाले इन चित्रों को ताड़पत्र पर भी बनाया जाने लगा। वर्तमान में ओडीशा के ताड़पत्र चित्र, रेखांकन एवं चित्रांकन का मिश्रित रूप होते हैं। चित्रों में प्रयोग किए जाने वाले रंग पूर्णत: प्राकृतिक होते हैं एवं इन्हें चित्रकार स्वयं ही अपने उपयोग हेतु बना लेते हैं। रंगों को स्थायी बनाने हेतु उनमें गोंद मिलाया जाता है।

आज ओडीशा के पुरी एवं रघुराजपुर ताड़पत्र पर चित्रकारी के प्रमुख केंद्र हैं। यहाँ उच्चकोटि के चित्र तैयार किए जाते हैं।

### पाठगत प्रश्न 2.2

1. दुनिया के किस भाग में ताड़पत्रों को लिखने हेतु पहले-पहले काम में लाया गया?
2. लेखन एवं चित्रांकन हेतु ताड़ की किस प्रजाति के पत्तों का प्रयोग किया जाता है?
3. ताड़पत्तों पर जैनधर्म संबंधी चित्रित पोथियाँ किस कालखण्ड में तैयार की गई?

### क्रियाकलाप

अपने मोहल्ले से ताड़ के कुछ पत्ते इकट्ठा करें और उन्हें धूप में सुखा लें। अभी आप इस पर पोस्टर रंग से कुछ पेंटिंग बनाएँ और कागज़ में लगाएँ।

## 2.3 गोंड चित्रकला

**शीर्षक** : **गोंड चित्रकला**
**स्थान** : **मध्य प्रदेश**
**अवधि** : **मध्यकाल का अंतिम चरण**
**प्रकार** : **चित्रकला**

## संक्षिप्त परिचय

गोंड भारत के सबसे बड़े आदिवासी समुदायों में से एक हैं। इनकी आबादी मुख्यत: मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में है। गोंड आदिवासियों की लगभग सत्तर से भी अधिक उपजातियाँ हैं और ये सामान्यत: कृषक होते हैं। मध्यकाल के अंतिम चरण में पूर्वी मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों पर गोंड राजाओं ने राज्य भी किया। तब यह भूभाग गौण्डवाना कहलता था। द्रविड़ मूल के इन आदिवासियों में गीत-संगीत, नृत्य एवं कथागायन तथा अपने घरों को सुसज्जित करने की सुदीर्घ एवं पुष्ट परंपरा है। प्रसिद्ध शोधकर्ता डॉ वैरियर एल्विन ने गोंड समाज एवं उनकी कलापरंपराओं पर गहन शोध किया है एवं अपनी पुस्तक 'ट्राइबल आर्ट ऑफ़ मिडिल इंडिया' में इनकी कला के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

चित्र 2.3: गोंड चित्रकला

## सामान्य विवरण

आदिवासियों में अपने घरों को सजाने की जन्मजात ललक होती है। वे अपने आस-पास उपलब्ध सामग्री; जैसे फूल-पत्ते, हड्डी, विभिन्न रंगों की मिट्टी आदि से यह कार्य करते हैं। गोंड आदिवासीयों में यह प्रवृति प्रमुखता से होती है। वे अपने शरीर पर गोदना चित्र तो बनवाते ही हैं, अपने घरों पर भी अनेक प्रकार से अलंकरण एवं लिपाई-पुताई करते हैं। त्योहारों एवं शुभ अवसरों पर घर-आँगन की दीवारों को गोबर-मिट्टी के गारे से लिपाई के उपरांत सफ़ेद, लाल,

पीली, एवं काली मिट्टी की लिपाई से सुसज्जित किया जाता है, जिसे 'ठींगना' कहा जाता है। दीवार के आधार एवं ऊपरी भाग में दरवाज़े, खिड़कियों एवं आले के चारों ओर इन्हें विशेष तौर पर बनाया जाता है। ठींगना ज्यामितिय पैटर्न होते हैं जो लाल, सफ़ेद, काले एवं पीले रंग की मिट्टी से, चौड़े पट्टों की पुनरावृति से संयोजित किए जाते हैं। यहाँ घरों के मुख्य दरवाज़े के दोनों ओर घोड़ा, हाथी, हवाई जहाज आदि चित्रित किए जाते हैं। दरवाज़े के बाहर चित्रित ये वाहन प्रतिष्ठा का प्रतीक माने जाते हैं। दरवाज़े पर एवं बैठक की दीवारों पर मिट्टी, गोबर एवं धान के भूसे को मिलाकर तैयार किए गए गारे से उभारदार भित्ति अलंकरण बनाए जाते हैं; जिनमें पशु-पक्षी, मानव एवं ज्यामितिय आकृतियां उकेरी जाती हैं। यह परंपरा आज भी मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के समूचे गोंड आदिवासियों में प्रचलन में है। प्रस्तुत चित्र (2.3) में मोर-मोरनी के युगल चित्र को चित्रित किया गया है। रंगों का संयोजन खूबसूरती से किया गया है।

पिछले कुछ वर्षों में कागज़ एवं कैनवास पर जो बहुरंगी गोंड चित्र पोस्टर एवं एक्रायलिक रंगों से गोंड चित्रकारों द्वारा बनाए जा रहे हैं, वे 1980 के दशक में अस्तित्व में आए हैं। मध्यप्रदेश के मण्डला जिले (अब डिण्डोरी जिला) के पाटनगढ़ गाँव के रहने वाले दो प्रधान गोंड चित्रकारों जनगढ़ सिंह श्याम एवं नर्मदा गोंड की सृजनशीलता के परिणामस्वरूप यह नई चित्रण शैली विकसित हुई जिसे शहरी कला जगत मे शीघ्र ही प्रसिद्धी एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई। भोपाल स्थित भारत भवन के तत्कालीन निदेशक जगदीश स्वामीनाथन ने इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

जनगढ़ सिंह श्याम के बनाए चित्र भारत में ही नहीं समूचे विश्व में गोंड चित्र शैली के नाम से विख्यात हो गए। इन चित्रों की बिक्री बड़े पैमाने पर और ऊँचे दामों में होने से गाँवों के अनेक गोंड युवक-युवतियों ने जनगढ़ सिंह श्याम की शैली का अनुसरण करते हुए चित्रांकन द्वारा जीवकोपार्जन करना आरंभ कर दिया, इस प्रकार गोंड चित्रकला का यह वर्तमान नया रूप प्रचलित हो गया। गोंड चित्रकला की यह नवीन धारा मध्यप्रदेश के मण्डला जिले के गोंड आदिवासियों की नई पीढ़ी में लोकप्रिय है, जो अब उनकी आजीविका का प्रमुख माध्यम बन गई है।

इस नवीन गोंड चित्रकला के चित्रकार कागज़ एवं कैनवास पर अपने देवी-देवताओं, किंवदंतियों एवं कथाओं के अतिरिक्त पेड़ पौधे एवं पशु-पक्षी तथा आदिवासी जीवन की दैनिक गतिविधि यों का चित्रांकन चमकीले एवं शुद्ध रंगों से करते हैं। चित्रित की गई मुख्य आकृतियों को वे पहले सपाट रंगों से भरते हैं, तदुपरांत उस पर अनेक रंगों के बिंदु एवं रेखा खण्डों की पुनरावृति से विभिन्न पैटर्न बनाते हुए अलंकरण करते हैं। इस प्रकार चित्रित आकृतियां बहुत ही आकर्षक प्रतीत होती हैं। इन चित्रों का एक बड़ा संग्रह भारत भवन, भोपाल एवं जनजातीय संग्रहालय, भोपाल में देखा जा सकता है।

## पाठगत प्रश्न 2.3

1. गोंड आदिवासी प्रमुख रूप से भारत के किन प्रांतों में रहते हैं?
2. किस विदेशी शोधकर्ता ने पारंपरिक गोंड कला एवं संस्कृति पर गहन शोध किया तथा उस पर कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक लिखी?

3. पारंपरिक गोंड लिपाई को क्या कहते हैं?

4. किन चित्रकारों के प्रयास से गोंड चित्रकला की नवीन धारा विकसित हुई?

## 2.4 कलमकारी

**शीर्षक : कलमकारी**
**स्थान : आंध्रप्रदेश**
**समय : प्राचीनकाल**
**प्रकार : चित्रकला**

### संक्षिप्त परिचय

कलमकारी वह शिल्प विधा है जिसमें कलम एवं रंगों की सहायता से कपड़ों पर चित्रकारी की जाती है। कभी-कभी यह कार्य ब्लॉक प्रिंटिंग एवं हस्तचित्रण या दोनों के सम्मिश्रण से भी किया जाता है। कलमकारी शब्द फारसी के दो शब्दों से मिलकर बना है, कलम और कारी। कलम का अर्थ है पैन तथा कारी का अर्थ है कार्य। अतः कलमकारी का अर्थ हुआ कलम से किया जाने वाला शिल्पकार्य।

चित्र 2.4: कलमकारी चित्र (गणेश)

वर्तमान में भारत के दक्षिणी भाग में प्रचलित यह शिल्प कला एक समय भारत के अन्य भागों में भी प्रचलन में थी। इस कला का विकास कब और कैसे हुआ इस सम्बंध मे विद्वानों मे मतभेद है। कुछ का मानना है कि इसका विकास मुगलों के भारत आगमन के बाद हुआ तो कुछ इसे एक प्राचीन कला मानते हैं। परंतु इस बात पर सभी सहमत हैं कि मुगलों के संरक्षण में यह कला अपने उत्कर्ष पर पहुंची और कलमकारी कपड़ों का व्यापार सुदूर देशों तक फैला।

आंध्रप्रदेश के श्रीकलाहस्ति नगर में बनाए जाने वाले कलमकारी चित्रों का विकास मंदिरों में हुआ। प्रमुख चित्रों में पट्ट चित्र, मंदिरों की पृष्ठभूमि में बनाए जाने वाले चित्र, रथों में लगाएँ जाने वाले पट्ट चित्र आदि शामिल हैं। इनमें चित्रित किए जाने वाले विषय हिंदु महाकाव्यों; जैसे- रामायण, महाभारत एवं शिवपुराण तथा अन्य कथाओं से लिए जाते थे।

मुस्लिम शासकों के संरक्षण में विकसित मछलीपट्टनम् की कलमकारी शैली में शासकों की रुचियों के अनुरूप अभिप्रायों एवं डिज़ाइनों का व्यापक प्रयोग हुआ। कलमकार, बनाए जाने वाले डिज़ाइन की बाह्य रेखा एवं मुख्य आकृतियाँ लकड़ी के ब्लॉक से छाप लेते थे और महीन विवरण तथा रंग भरने का कार्य कलम से करते थे। नमाज पढ़ने हेतु जनमाज़, शामियानों, दरवाजों के परदों एवं कनातों पर मेहराब डिज़ाइन के साथ पशु-पक्षी आकृतियाँ एवं फूल-पत्तियों के बूटे बनाए जाते थे, जिन्हें मध्य पूर्व के देशों में बेचा जाता था।

ब्रिटिश शासन के दौरान कलमकारी के डिज़ाइन एवं उत्पादों में बड़ा परिवर्तन हुआ अब उन्हें पोशाकों एवं घरेलू उपयोग के कपड़ों, जैसे- परदों, रजाइयों, गिलाफों आदि के लिए बनाया जाने लगा। फूल-पत्तियों के डिज़ाइन मुख्य हो गए।

## सामान्य विवरण

आरंभ में कलमकारी केवल कलम द्वारा की जाती थी, परंतु बाद में इसमें ब्लॉक प्रिंटिंग का भी समावेश हो गया। इस प्रकार कलमकारी की दो शैलियाँ बन गई- पहली, कलमकारी शैली, इसमें केवल कलम से चित्रित कलमकारी की जाती थी और मुख्यतः हिन्दू धार्मिक विषयों पर चित्र बनाए जाते थे। दूसरी, मछलीपट्टनम शैली जिसमें ब्लॉक प्रिंटिंग एवं कलम द्वारा चित्रकारी, दोनों के मिश्रण से कपड़े अलंकृत किए जाते थे।

प्रस्तुत कलमकारी चित्र (2.4) श्री कलाहस्ति शैली में बना है, जिसमें चतुर्भुज गणेश को विराजमान दर्शाया गया है। चित्र के चारों ओर आकर्षक हाशिए अंकित किये गए हैं। बाहरी हाशिया अधिक चौड़ा है जिसमें बेल बूटे बने हैं। हाशिये के भीतर पृष्ठभूमि में गहरा पीला रंग भरा गया है। मध्य में गणेश की प्रभावशाली आकृति बनाई गई है, जिसमें उनके चेहरे के चारों ओर प्रभामण्डल में गहरा लाल और लाल भूरा रंग भरा गया है तथा बाहरी बार्डर कमल की पंखड़ियों की पुनरावृत्ति से अलंकृत किया गया है। चतुर्भुज गणेश के हाथों में पद्म, शंख और मोदक है तथा चौथा हाथ अभय मुद्रा में है। उनका चेहरा भावप्रवण तथा शरीर संतुलित चित्रित किया गया है। चित्र में प्राकृतिक रंग तथा वनस्पति रंगों का प्रयोग किया गया है। यहाँ नीले रंग की अनेक आभाओं से चित्र में एक कोमल प्रभाव उत्पन्न किया है।

## पाठगत प्रश्न 2.4

1. कलमकारी क्या है इसका यह नाम क्यों पड़ा?
2. कलमकारी की दो शैलियाँ कौन-सी हैं और इनमें क्या अंतर हैं?

## क्रियाकलाप

अपने इलाके के किसी पुस्तकालय में जाइए और कलमकारी कला के कुछ चित्र एकत्र करके उनका अध्ययन कीजिए। अब पेन से कोई भी कलमकारी डिज़ाइन बनाइए।

## आपने क्या सीखा

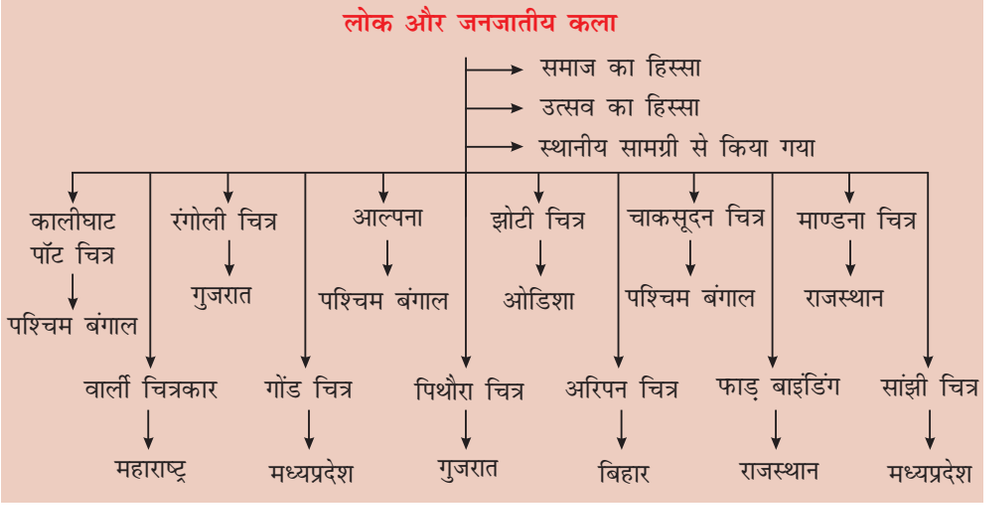


### सीखने के प्रतिफल

छात्र द्वारा

- स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का अन्य कला रूपों को बनाने के लिए प्रयोग।
- कलाकृति बनाने के लिए विभिन्न तकनीकों और रंग सामग्री का प्रयोग।

## पाठांत प्रश्न

1. चित्रकथी चित्र क्या हैं, वे कहाँ बनाए जाते हैं?
2. चित्राकथी चित्रों की विषयवस्तु एवं उन्हें बनाने में प्रयुक्त होने वाली सामग्री के बारे में बताइए?
3. चित्रकथी प्रदर्शन कब और कहाँ आयोजित होते हैं?
4. ताड़पत्र पर लेखन कब और कहाँ आरंभ हुआ?
5. ताड़पत्र की किन प्रजातियों का लेखन हेतु प्रयोग होता है तथा यह लेखन एवं रेखांकन किस प्रकार किया जाता है?
6. ताड़पत्रों पर चित्रांकन कब आरंभ हुआ, किस धर्म के ग्रंथ इन पर लिखे गए एवं वे कहाँ संग्रहित हैं?
7. ओडिशा में ताड़पत्र पर चित्रकारी किस समुदाय के चित्रकार करते हैं तथा इनके बनने के प्रमुख केंद्र कौन-से हैं?
8. गोंड आदिवासी भारत के किन प्रांतों में रहते हैं, उनकी परंपरागत लिपाई क्या कहलाती है?
9. किन दो गोंड चित्रकारों के प्रयास से गोंड चित्रकला की नई धारा कब और कहाँ विकसित हुई?
10. गोंड चित्रकला के विकास में किस संस्था ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### 2.1

1. (i) ठाकुर
2. (i) कोंकण

### 2.2

1. दक्षिण एशिया एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया।
2. ताड़ की 'बोरास्सस' अथवा 'कोरीफा अमब्राक्यूलीफैश' प्रजातियाँ।
3. जैन धर्म संबंधी चित्रित पोथियाँ दसवीं से पन्द्रहवीं सदी ईस्वीं में तैयार की गई।

### 2.3

1. गोंड आदिवासी मुख्यत: मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में रहते हैं।
2. डॉ. वैरियर एल्विन ने, उन्होंनें 'ट्राइबल आर्ट ऑफ़ मिडिल इंडिया' नामक पुस्तक लिखी।

3. पारंपारिक गोंड लिपाई को ठींगाना कहते हैं।

4. जनगढ़ सिंह श्याम एवं नर्मदा गोंड नामक चित्रकारों के प्रयास से।

## 2.4

1. यह एक कला शैली है। इसे कलम एवं रंगों की सहायता से कपड़ों पर चित्रकारी की जाती है। 'कलम' का अर्थ पैन तथा 'कारी' का अर्थ है कार्य।

2. प्रथम, कलमकारी शैली में केवल कलम से चित्रित की जाती है। दूसरी, मुछलीपट्टनम शैली जिसमें ब्लॉक प्रिंटिंग एवं कलम द्वारा चित्रकारी की जाती है।

## शब्दकोश

| | | |
|---|---|---|
| आंचलिक | : | क्षेत्रीय |
| घुमक्कड़ | : | एक स्थान पर स्थायी रूप से न रहने वाले |
| कालांतर | : | समय बीतने पर |
| भित्तिचित्र | : | दीवार पर बनाए जाने वाले चित्र |
| पाण्डुलिपि | : | हाथ से लिखी मूल पुस्तक |
| उत्कीर्ण | : | खुरचना अथवा खोदना |
| प्रवृत्ति | : | आदत |
| ज्यामितीय | : | ज्यामिति पर आधारित |
| उकेरना | : | चित्रित करना |
| मिथकथाएँ | : | प्रचलित विश्वासों पर आधारित कथाएँ |